हर आत्मा को रिसपेक्ट देकर महादानी, वरदानी बनो

दादी जानकी

सदा ही हमारी गुडमार्निंग, गुड डे और गुडनाइट होती है। आज बाबा ने सुनाया कि तुरन्त दान करो। तुरन्त दान माना दे दान तो छूटे ग्रहण। जो भी ग्रहचारी है, कुछ नीचे ऊपर है, कोई भारीपन है। जो कुछ भी है दे दान तो ग्रहण छूट जाता है और पुरुषार्थ में सफलता मिलना शुरू होता है। दूसरा दान है, बाबा जो ज्ञान हमको देता है वह धारण करके दान देना। जैसे धन कमाते हैं अपने लिए, फिर अपने को साफ रखने के लिए दूसरों को दान करते हैं तो उसका महापुण्य हो जाता है। दिल कहती है औरों का भी सफल हो। उसमें है धन दान, ज्ञान दान और गुण दान। धन न हो तो कोई हर्जा नहीं लेकिन ज्ञान और समझ हो। पहले वाले गुण भले कितने भी अच्छे हों, वह कोई गुण दान नहीं करेंगे। न उस दान में कोई इतना पुण्य है। बाबा जो गुण सिखलाते हैं, ईश्वरीय गुणों में जो शक्ति है वो दान करना माना ही अपनी स्थिति को शक्तिशाली बना करके औरों को सहयोग देना, यह है ज्ञान दान। सबसे गुण ग्रहण करके, अपने को गुणवान बनाकर सबको गुण दान करना है। करना माना सोचना नहीं लेकिन तुरन्त करना माना जो सोचने और करने में कोई फर्क ना हो। सोचा और नहीं किया तो दान का महत्व चला गया, वह पुण्य के खाते में नहीं जायेगा। उसको दान भी नहीं माना जायेगा। बाबा ने कई बार समझाया है कि दानी बनो, महादानी बनो, वरदानी बनो। तुरन्त दान वाला वरदानी बन जाता है। पहले चाहिए दानी, दाता वह जो कभी मांगता नहीं। मांगते वही है जिसके पास कोई कमी है और जो असन्तुष्ट है। जिसमें सहनशीलता, सन्तुष्टता है वो सदा भरपूर और दाता होगा। सन्तुष्टता ने बडा दानी और महादानी बना दिया, गिनती करके दान नहीं करते हैं। जैसे उनको महादानी का वरदान मिला है और वह वरदान नेचुरल है, जो समय पर सबको सुख देता है। उनके सामने जो आये और जो जिसको आवश्यक हो, उनको वह भरपूर कर देता है। जैसा बाबा है, कितने को वरदान देकर भरपूर कर देता है। बाबा की पधरामनी के पहले सबको होता है कि हम बाबा से मिलेंगे क्योंकि देने वाले दाता के पास जा रहे हैं। क्या और कितना मिलेगा, यह हर एक के दिल से निकलता है। बाबा के मिलन में बहुत खुशी है जिससे ताकत आती है। अपनी पहचान भी आ जायेगी और आगे बढ़ने का रास्ता खुल जायेगा। कई बातें जो हमारे लिये आवश्यक हैं, जो अपने पुरुषार्थ से नहीं होती हैं लेकिन बाबा से मिलने से हमारी बहुतकाल की मेहनत से जैसे बाबा फल स्वरुप में देता है। दाता बनना माना किसी को मेहनत से छुडाना, ये बडा दान है। कोई अपने भाग्य से दानी होते हैं, कोई कर्मणा से दानी बनते हैं। आजकल के जमाने अनुसार कोई टैक्स बचाने वाले दानी नहीं होते हैं। सच्चे दानी दुनिया को दिखाने वाले नहीं होते। एक होता है तुरन्त दान, दूसरा होता है गुप्त दान वह पुण्य के खाते में जाता है। तुरन्त दानी उसको कहेंगे जो लौकिक दुनिया में भी जब किसको तकलीफ होती है तो जूते नहीं पहनेंगे और भागेंगे सेवा पर, वह किसके लिए रूकेंगे नहीं, तो तुरन्त दान का महापुण्य होता है। जैसे बाबा दाता है बच्चों को भी ऐसे दाता, वरदाता और भाग्यविधाता बना देता है। बाबा का ड्रामा में प्लैन है कि जैसे मैं हूँ वैसे मेरे बच्चे ऊंचे बने। शुरु से बाबा को देखा है ऐसे नहीं कि मैं ही ऊंचे ते ऊंचा भगवान हूँ, परन्तु उसकी महिमा भक्ति में भी तभी गाते हैं जो नीच को ऊंच, पापी-पतितों को पावन बनाया है। क्षमा और रहम का सागर बनाता है। हम कितना प्यार करते हैं वह गिनती नहीं करता, वह प्यार के सागर के रुप में हमको पावन बनाता है। बाबा हर बात में ध्यान खिंचवाता है कि बच्चे बाप को पहचानो, जिस बाप द्वारा तुमको इतनी प्राप्ति होती है। अनुभव कहता है कि अपने को आत्मा समझो, जानो और बाबा को दिल से पहचानो। जितनी पहचान उतनी प्राप्ति। बाप को पहचानने से आँख खुल जाती है, बुद्धि विशाल, दूरादेशी बन जाती है। जैसे बाप की बुद्धि है, ब्रह्मा बाबा जगत पिता कैसे बना? शिवबाबा तो इसमें आया लेकिन सर्व का कल्याण इसको करना है, इसलिए यज्ञ रचा है। हम सबको पुण्य आत्मा बनाने के लिए यज्ञ रचा और हमको शुद्र से ब्राह्मण बना करके, ब्राह्मण से सेवाधारी बनाया। बाबा ने यज्ञ रचा है। बाबा ने कहा था कि यह महान यज्ञ और यज्ञ कुण्ड कोने-कोने में बनेंगे तभी तो पुण्य का खाता जमा होगा।

अभी का जो कल्चर ऑफ पीस का प्रोजेक्ट चल रहा है तो पहले अपनी जीवन बनानी है तब विश्व में पीस आयेगी। हम भी ऐसी लाइफ बनायें जो विश्व का कल्चर एक हो जाये, जो सबके अन्दर से आवाज़ निकलें। जो भी नियम बाबा ने हमको बनाकर दिया है, उस पर चलने से हम पुरुषोत्तम बनेंगे। देवता पुरुषोत्तम हैं, हम नहीं हैं लेकिन ऐसे बन रहे हैं उसमें जो हमारी लगन है अभी बनने की, वह सतयुग में नहीं होगी। उन जैसी मर्यादा धारण करो तो उस जैसी हमारी सूरत और सीरत हो जाये। बाबा कहे भले तुम्हारी सूरत मनुष्य की हो लेकिन सीरत देवताओं जैसी हो। आजकल तो बाबा कहते हैं कि देवता सतयुग में होंगे लेकिन अभी फरिश्ता बनो। फरिश्ता मनुष्य जैसे आकारी हैं परन्तु सबके रक्षक हैं। फरिश्ते भी कहाँ से बने? अभी हम फरिश्ता बन रहे हैं। रिसपेक्ट देने के लिए क्या चाहिए? हर एक आत्मा को रिसपेक्ट दो। रिस्पेक्ट देना एक बहुत बडा भारी दान है, उसमें भी बडी खुली दिल चाहिए। कई कहते हैं कि इसका चरित्र तो हमने देखा है और आप कहते इनको रिस्पेक्ट दो? फिर गुस्सा हमारे पर करेंगे लेकिन हमने बाबा को देखा है कि वे हर एक छोटे-बडे, बाल-बूढे को रिस्पेक्ट दे करके ऊंचा उठाते थे। बाबा के पास कैसी भी आत्मा आई होगी, बाबा ने स्वमान में रहने की स्मृति दिलाई है कि तुम कैसे हो। जैसा देखेंगे, ऐसा सोचेंगे इसलिए बाबा कहते कि देखो ऐसे जैसे तुम्हारा बाप देखता है फिर रिस्पेक्ट पैदा होता है। जो सेल्फ रिस्पेक्ट में रहता है वो औरों को रिस्पेक्ट देता है। बाहर वाले भी कहते हैं कि सबकुछ है लेकिन स्वमान की कमी है। स्वमान में रहने वाला सम्मान मांगता नहीं है। स्वमान में रहने वाला अपने स्वरुप को जान करके अपने स्वधर्म में स्थित होता है तो शान्ति और शीतलता आती है। शीतलता इतनी हो जो गरम को ठण्डा बना सके, जरा भी रिएक्ट न करे, जरा सा ऐसा मुँह न बनाये। अपने आपको दर्पण में देख करके अपने फेस को सदा देखो। एक ही दर्पण है जिसमें अपने आपको देखा जाता है। बाबा ने कहा फोटो जब निकालते हैं तब दूसरों का निकालते हैं तो क्या अपना नहीं निकाल सकते हो? कैमरा में कोई अपना फोटो निकाल सकते हैं? नहीं, हमेशा दूसरों का निकाला जाता है इसलिए दुनिया आपके सामने होते अपना फोटो निकालो। जितना स्वमान में रहेंगे आटोमेटिक और आत्माओं को स्मृति दिलाने के लिए रिस्पेक्ट देते हैं और देना ही है, यह हमारी सेवा है।

श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ वृत्ति और श्रेष्ठ दृष्टि की पहचान देना - यह है रिस्पेक्ट देना।

दूसरा है हर बात को समझने के लिए, सुनने की भावना रखना। अच्छा, सयाना, समझदार, सच्चा वह जिसमें सुनने की भावना हो। सुनता वह है जिसमें सीखने की भावना हो और सीखता वह है जिसको सम्पूर्ण बनना है। अगर मुँह ऐसे कर लेंगे, कहेंगे कि सम्पूर्ण तो कोई बना ही नहीं है, ऐसी बातें सोचने वाला न पूरी अण्डरस्टैण्ड करेंगे। अगर आपको अपनी जीवन बनानी है, ध्यान देना है तो पूरी अण्डरस्टैण्डिंग हो। जो समझा हुआ होता है वह अभ्यास करने लग पड़ता है। नहीं समझा है तो एवाइड करेंगे और कहेंगे चलो कर लेंगे। जिसको समझ में आया वह तुरन्त करेंगे फिर वह अभ्यास बढाने के लिए ऐसे ही संग में रहेंगे। आजकल तो सुनने की भी शक्ति नहीं है। सतोगुणी बुद्धि से, सीखने की भावना से सुनना बहुत अच्छा है। अहिंसा और सत्यता की आपस में बहुत मित्रता है। दोनों भाई-भाई हैं, दोनों परमात्मा के बेटे हैं। निगेटिव में हिंसा है। अन्दर से पहले हिंसा को खत्म करना है, जिससे तुम अपने को प्यार कर सको। खुद के बच्चे को वा भाई-भाई को प्यार नहीं करते हैं क्योंकि हिंसा का विचार है। समझाने के लिए टाइम नहीं है लेकिन थप्पड़ लगाने के लिए टाइम है। किसी के दिल को दुखाना भी हिंसा है। रिजेक्ट करना भी दुःख देना ही है। हमको सारे विश्व में प्रैक्टिकल रीति से यह कल्चर ऑफ पीस दिखाना है। जीवन को अमूल्य बनाना है। मम्मा ने कहा था कि शिक्षायें खराब नहीं होती। सदा देखो कि हर एक में बहुत अच्छी कला वा विशेषतायें हैं जो यूज़फुल हैं। रहम नहीं तो सच्चाई नहीं, सच्चाई नहीं तो प्रेम नहीं। रहम, सच्चाई और प्रेम जिसके दिल में है वह यही बातें धारण करते हैं। फिर हम ध्यान रखें कि हमको सुख देना है क्योंकि प्रकृति तो इतना सुख देती है। सदा अपना, बाप का और नेचर का ख्याल करें। प्रकृति माँ है, परमात्मा बाप है और हम आत्मा प्रकृति के आधार पर चलते हैं। साइलेन्स से प्रकृति को माँ समझना है। और कुछ नहीं करो लेकिन माँ की दुआयें लो। हमको उनकी सूक्ष्म दुआयें चाहिए। प्रकृति से सम्पत्ति आती है। युनिटी में एकता को लाना है। एकता ऐसी हो जो अनेक मत को मिला करके एक कर दे। शिवबाबा ने इतनी समझ दी है। मन एकाग्र है तो हम वायुमण्डल को अच्छा बना सकते हैं।